3

बिंदु-बिंदु विचार

– रामानंद दोषी

प्रस्तुत पाठ में दो विचार प्रधान लघु निबंध प्रस्तुत किए गए हैं। पहले निबंध 'वाणी और व्यवहार' में लेखक ने किसी भी सीख को रट लेने तथा उसे समझ-बूझकर आचरण में सही ढंग से न उतार पाने की प्रवृत्ति पर व्यंग्य किया है। उसने वाणी और व्यवहार की एकरूपता पर बल दिया है।

'पारसमणि' निबंध में लेखक ने प्रत्येक व्यक्ति को अपने भीतर छिपी 'पारसमणि' को पहचानने के लिए परामर्श दिया है। लेखक की दृष्टि में यह पारसमणि है- हमारी सेवा-भावना, हमारा अपना परिश्रम और लगन। ऐसी पारसमणि के स्पर्श से मनचाहा सोना बनाया जा सकता है, वांछित उपलब्धि प्राप्त की जा सकती है। किंतु इसके साथ ही उसने हमें यह चेतावनी भी दी है कि सोना बनाते समय मन की शुद्धता अनिवार्य है, अन्यथा सोने की मादकता तथा उसे और अधिक पाने का लालच हमें विनाश की ओर ले जा सकता है।

1. वाणी और व्यवहार

मुन्ना जोर-जोर से अपना पाठ रट रहे हैं- "क्लीनलीनेस इज नेक्स्ट टु गॉडलीनेस : क्लीनलीनेस इज नेक्स्ट टु गॉडलीनेस।"

बड़ा सुंदर पाठ है। हिन्दी में इसका अर्थ लगभग यह हुआ कि 'शुचिता देवत्व की छोटी बहन है।' मेरा ध्यान अपनी किताब से उचट कर मुन्ना की ओर लग जाता है।

पाठ याद हो गया। मुन्ना के मित्र बाहर से बुला रहे हैं। मुन्ना पैर में चप्पल डाल कर सपाटे-से बाहर निकल जाते हैं। उनके खेलने का समय हो गया है।

अब कमरे में बिटिया आती हैं। भाई पर बहुत लाड़ है इनका। मुन्ना सात समंदर पार की भाषा पढ़ रहे हैं- इसलिए भाई का आदर भी करती हैं। बिटिया अंग्रेजी नहीं पढ़तीं।

मेज के पास पहुँचकर बिटिया निशान के लिए कागज लगाकर मुन्ना की किताब बंद करती हैं; किताबों-कॉपियों-कागजों के बेतरतीब ढेर को सँवारकर करीने से चुनती हैं; खुले पड़े पेन की टोपी बंद करती हैं; गीला कपड़ा लाकर स्याही के दाग-धब्बे पोंछती हैं और कुरसी को कायदे से रखकर चुपचाप चली जाती हैं।

क्लीनलीनेस इज नेक्स्ट टु गॉडलीनेस!

मेरे सामने ज्ञान नंगा होकर खिसियाना-सा रह जाता है।

क्षण मात्र में सब कुछ बदल जाता है! गंभीर घोष से सुललित शैली में दिए गए अनेकानेक भाषणों में सुने सुंदर सुगठित वाक्य कानों में गूँजने लगते हैं! मनमोहिनी जिल्द की शानदार छपाईवाली पुस्तकों में पढ़े कलापूर्ण अंश आँखों के आगे तैर जाते हैं!

प्रवचन और अध्ययन सब बौने हो गए हैं!

आचरण की एक लकीर ने सबको छोटा कर दिया है।

ज्ञान चाहे मस्तिष्क में रहे या पुस्तक में, वह चाहे मुँह से बखाना जाए या मुद्रण के बंदीखाने में रहे- आचरण में उतरे बिना विफल मनोरथ है।

धर्म और राजनीति, समाज और व्यवहार के क्षेत्रों में विविध-विविध मंचों से उपदेश देनेवाले मुन्नाओ! केवल कंठ से मत बोलो- हम तुम्हारे हृदयों की गूँज सुनना चाहते हैं। वाणी और व्यवहार में

समता आने दो– हम वास्तव में तुम्हारे समक्ष श्रद्धानत होना चाहते हैं।

मुन्ना! पाठ को रटो मत, उसे अपने अंदर समो लो!

बात को मुँह से और स्वयं को घर से बाहर निकालने से पहले इन दाग-धब्बों को पोंछ लो, जो तुम्हारी असावधानी से चारों ओर पड़ गए हैं।

2. पारसमणि

पारसमणि है तुम्हारे पास?

नहीं तो।

और तुम्हारे पास?

नहीं।

और तुम्हारे?

नहीं।

यहाँ-वहाँ जाने कितनों से पूछा, पर पारसमणि तो कहीं मिली नहीं। क्या इस अद्‌भुत मणि की बात निरी कल्पना है? यदि वास्तव में ऐसी कोई मणि है, तो मुझ अभागे को मिलती क्यों नहीं? तभी किसी ने कहा, "है, मेरे पास है पारसमणि। तुम्हें चाहिए? क्या करोगे उसका?"

उत्तर दिया : हाँ, चाहिए। इसीलिए न, खोजता फिर रहा हूँ। उसके स्पर्श से लोहे को सोना बनाऊँगा।

उसी ने कहा : शुभ संकल्प है तुम्हारा। मणि तो मैं तुम्हें दे दूँ, पर एक बात बताओ– लोहा है तुम्हारे पास?

मुझे जैसे काठ मार गया। पारस की पहली शर्त लोहा है– यह तो कभी ध्यान ही न आया।

मेरा असमंजस देख वही बोला "न सही लोहा, लकड़ी, पत्थर,

चमड़ा, पीतल कुछ तो होगा, वही लाओ, मेरे पास बहुत प्रकार की पारसमणियाँ हैं।''

आश्चर्य! क्या पारसमणियों के भी बहुत प्रकार होते हैं? परंतु मेरे पास तो कुछ भी नहीं है। बिल्कुल खाली हाथ हूँ। हाय, सोना बनाने का कैसा सुयोग हाथ से निकला जा रहा है।

उसी ने धीरज बँधाया : निराश मत हो। जिसके पास कुछ नहीं है, उसके लिए भी पारसमणि है।

सुखद आश्चर्य से भर उठा मैं। मणि लेने के लिए हाथ फैला दिए।

वही बोला : याचना के लिए फैलाए गए हाथ का भाग केवल तिरस्कार है, बंधु!

हाथ बढ़ाओ तो किसी उद्योग के लिए। तुम पारसमणि खोजते फिर रहे हो न, परंतु वह तो तुम्हारे भीतर ही है– स्पर्शमणि। खाली हाथ हो, तो सेवा के स्पर्श से, लोहे–पीतल वाले हो, तो कौशल के स्पर्श से और प्रतिभा वाले हो, तो लगन के स्पर्श से मनचाहा सोना बना सकते हो तुम। स्पर्श तुम्हारा जितना शुद्ध होगा, सोनां भी उसी मात्रा में शुद्ध प्राप्त होगा तुम्हें।

मैं धन्य होकर लौटने लगा, तो उसी ने टोका : गुर सिखाया है, इसलिए यह पूछने का अधिकार है मेरा, सोना बनाकर उसका करोगे क्या?

मैं हत्प्रभ रह गया – यह भी कोई प्रश्न हुआ भला!

उसी ने कहा : प्रश्न यह उचित है और आवश्यक भी। सोने में अच्छाई जितनी है, बुराई उससे कम नहीं है। सोना जिसके पास है, उसे मद से मारता है और जिसके पास नहीं है, उसे लोभ से त्रस्त रखता है। शुद्ध सोने का वास शुद्ध व्यक्ति और शुद्ध समाज में ही संभव है।

अभ्यासमाला

(1)

बोध एवं विचार

1. **पूर्ण वाक्य में उत्तर दो :**

(क) मुन्ना कौन-सा पाठ याद कर रहा था?

(ख) मुन्ना को बाहर कौन बुला रहा था?

(ग) मुन्ना की बहन उसके लिए क्या-क्या कार्य किया करती थी?

(घ) आपकी राय में अंग्रेजी की सूक्ति का मुन्ना और उसकी बहन में से किसने सही-सही अर्थ समझा?

(ङ) पाठ के अनुसार सात समंदर की भाषा क्या है?

2. **संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :**

(क) लेखक का ध्यान अपनी किताब से उचट कर मुन्ना की ओर क्यों गया?

(ख) बिटिया मुन्ना की मेज को क्यों सँवार देती है?

(ग) लेखक को सारे प्रवचन-अध्ययन बौने क्यों लगे?

(घ) "हम वास्तव में तुम्हारे समक्ष श्रद्धानत होना चाहते हैं।"- इस वाक्य में लेखक ने 'वास्तव' शब्द का प्रयोग क्यों किया है?

(ङ) 'वाणी और व्यवहार में समता आने दो।'-यदि वाणी और व्यवहार एक हो तो इसका परिणाम क्या होगा? अपना अनुभव व्यक्त करो।

(च) 'पाठ याद हो गया।' मुन्ना का पाठ याद हो जाने पर भी लेखक उससे प्रसन्न नहीं हैं, क्यों?

(छ) लेखक ने इस निबंध में अंग्रेजी की सूक्ति–'क्लीनलीनेस इज़ नैक्स्ट टु गॉडलीनेस' को आधारबिंदु क्यों बनाया है ?

3. **आशय स्पष्ट करो (लगभग 50 शब्दों में) :**

(क) आचरण की एक लकीर ने सबको छोटा कर दिया है।

(ख) केवल कंठ से मत बोलो – हम तुम्हारे हृदयों की गूंज सुनना चाहते हैं।

4. **सही शब्दों का चयन कर वाक्यों को फिर से लिखो :**

(क) लेखक .... पढ़ रहा था।

(समाचार पत्र, किताब, पत्रिका, चिट्ठी)

(ख) बिटिया .... नहीं पढ़तीं।

(अंग्रेजी, हिन्दी, असमीया, बंगला)

(ग) .... आचरण में उतरे बिना विफल मनोरथ है।

(प्रवचन, अध्ययन, व्यवहार, ज्ञान)

(घ) आचरण की एक .... ने सबको छोटा कर दिया है।

(रेखा, बिंदू, लकीर, इच्छा)

(ङ) प्रवचन और अध्ययन सब .... हो गए हैं।

(छोटे, नाटे, ऊँचे, बौने)

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

1. कुछ शब्द ऐसे हैं जिनका एक वचन और बहुवचन दोनों में एक ही रूप रहता है; किंतु वाक्य में प्रयुक्त क्रियाओं को देखकर वचन निर्णय किए जाते हैं। जैसे–

मुन्ना का **पाठ** याद हो गया।

मुन्ना के **मित्र** बाहर बुला रहे हैं।

ऐसे ही किन्हीं दस शब्दों का चयन करो और दोनों वचनों में वाक्य बनाओ।

2. **निम्नलिखित शब्दों का सही उच्चारण करो :**

शुचिता, क्षण, प्रवचन,आचरण, मुद्रण, मस्तिष्क, भाषण, कॉपी।

3. **निम्नलिखित शब्दों के लिए दो-दो समानार्थी (पर्याय) लिखो :**

किताब, सोना, लाड़, पत्थर, समंदर, आँख।

4. **नीचे दिए गए शब्दों में विशेषण और विशेष्य (संज्ञा) अलग-थलग हुए हैं। आप इनके उपयुक्त विशेषण-विशेष्य के जोड़े बनाओ :**

विशाल, ऊँची, सड़क, बुटी, सुदीर्घ, प्राणदायी, विष, विध्वंसक, मंदिर, मीनार, तोप, प्राणघातक।

योग्यता-विस्तार

कथनी और करनी में समानता की आवश्यकता पर एक संक्षिप्त निबंध लिखो।

शब्दार्थ एवं टिप्पणी

वाणी	=	बोली, वचन
शुचिता	=	पवित्रता
बेतरतीब	=	अव्यवस्थित, बिना क्रम के
करीने से	=	अच्छी तरह से, ढंग से
घोष	=	आवाज, ध्वनि
प्रवचन	=	उपदेशपरक भाषण
समक्ष	=	सामने, सम्मुख
बौना	=	छोटा, नाटा
लकीर	=	रेखा
मस्तिष्क	=	दिमाग
मनोरथ	=	मनोकामना
श्रद्धानत	=	श्रद्धा से नत

बोध एवं विचार

(अ) सही विकल्प का चयन करो :

1. किसी ने कहा : "मेरे पास है पारसमणि" – इसमें 'किसी' कौन है ?
   (क) कोई राह चलता व्यक्ति (ख) लेखक का विवेक
   (ग) लेखक की बुद्धि (घ) लेखक की कल्पना
2. "लोहा है तुम्हारे पास ?" में 'लोहा' से क्या आशय है ?
   (क) उद्यशीलता (ख) लौह धातु
   (ग) भौतिक उपकरण (घ) अनुभव

(आ) संक्षिप्त उत्तर दो (लगभग 25 शब्दों में) :

3. लेखक पारसमणि क्यों ढूँढ़ रहा था ?
4. लेखक ने स्पर्शमणि के कौन–कौन से रूप बताए हैं ?
5. 'शुद्ध स्पर्श' से क्या तात्पर्य है ?
6. सोना का होना और न होना दोनों ही समस्या के कारण क्यों हैं ?

(इ) आशय स्पष्ट करो (लगभग 50 शब्दों में) :

(क) याचना के लिए फैलाए हाथ का भाग केवल तिरस्कार है, बंधु!
(ख) शुद्ध सोने का वास शुद्ध व्यक्ति और शुद्ध समाज में ही संभव है।

भाषा एवं व्याकरण ज्ञान

नीचे दिए गए वाक्य को पढ़ो :

(क) सोना पाकर उसका करोगे क्या ?
– सोना पाकर उसका क्या करोगे ?

(ख) सोने के आकांक्षी हो तुम।
– तुम सोने के आकांक्षी हो।

वाक्य में विशेष अंश पर बल देने के लिए पदों के सामान्य क्रम को बदल दिया जाता है। पाठ में से इसी प्रकार के वाक्य छाँटकर लिखो और उनका सामान्य पदक्रम भी लिखो।

योग्यता-विस्तार

गांधीवादी चिंतक के रूप में विख्यात **रवींद्र केलेकर** का यह लघु निबंध पढ़ो और कक्षा में चर्चा करो -

गिनी का सोना

शुद्ध सोना अलग है और गिन्नी का सोना अलग। गिन्नी के सोने में थोड़ा-सा ताँबा मिलाया हुआ होता है, इसलिए वह ज्यादा चमकता है और शुद्ध सोने से मजबूत भी होता है। औरतें अकसर इसी सोने के गहने बनवा लेती हैं।

फिर भी होता तो वह है गिन्नी का ही सोना।

शुद्ध आदर्श भी शुद्ध सोने के जैसे ही होते हैं। चंद लोग उनमें व्यावहारिकता का थोड़ा-सा ताँबा मिला देते हैं और चलाकर दिखाते हैं। तब हमलोग उन्हें "प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट" कहकर उनका बखान करते हैं।

पर बात न भूलें कि बखान आदर्शों का नहीं होता, बल्कि व्यावहारिकता का होता है। और जब व्यावहारिकता का बखान होने लगता है तब "प्रैक्टिकल आइडियॉलिस्टों" के जीवन से आदर्श धीरे-धीरे पीछे हटने लगते हैं और उनकी व्यावहारिक सूझबूझ ही आगे आने लगती है।

सोना पीछे रहकर ताँबा ही आगे आता है।

चंद लोग कहते हैं, गांधी जी 'प्रैक्टिकल आइडियालिस्ट' थे। व्यावहारिकता को पहचानते थे। उसकी कीमत जानते थे। इसी लिए वे अपने विलक्षण आदर्श चला सके। वरना हवा में ही उड़ते रहते। देश उनके पीछे न जाता।

हाँ, पर गांधीजी कभी आदर्शों को व्यावहारिकता के स्तर पर उतरने नहीं देते थे। बल्कि व्यावहारिकता को आदर्शों के स्तर पर चढ़ाते थे। वे सोने में ताँबा नहीं बल्कि ताँबे में सोना मिलाकर उसकी कीमत बढ़ाते थे।

इसलिए सोना ही हमेशा आगे आता रहता था।

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं। खुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें, यही महत्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

पारसमणि	=	ऐसी मणि जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाए
निरी	=	मात्र, सिर्फ
काठ मारना	=	सुन्न रह जाना, जड़वत हो जाना
हाथ से निकलना	=	मौका चूक जाना
असमंजस	=	दुविधा
सुयोग	=	सुअवसर, अच्छा मौका
याचना	=	माँगना
प्रतिभा	=	सृजनशील बुद्धि
गुर सिखाना	=	रहस्य की बात बताना
हत्प्रभ	=	भौंचक
मद	=	नशा, घमंड
त्रस्त	=	परेशान, दुखी